DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor(G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutauna, Madhubani
Email--Kdkbjarti08@gmail.com
B.A
Part-2.Paper-3Date-12-08-2020

भारतीय राजनीति में धर्म की भूमिका की विवेचना----

भारतीय राजनीति के निर्धारक तत्वों में 'धर्म और साम्प्रदायिकता'अत्यंत प्रभावशाली तत्व माना जाता है।धर्म का प्रयोग राजनीति में जहाँ एक ओर तनाव उत्पन्न करने के लिए किया जाता है वहाँ दूसरी ओर प्रभाव और शक्ति अर्जित करने का भी धर्म माध्यम मान लिया जाता है।जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी और जय गुरुदेव की राजनीतिक शक्ति की आधारशिला उनके अपने अपने सम्प्रदायों में अनुयायियों की संख्या बल है। धर्म के आधार पर राजनीतिक दलों का निर्माण होता है, चुनावों में समर्थन और मत प्राप्त करने के लिए धर्म का सहारा लिया जाता है जनता से की जाने वाली अपीलों, उन्हें दिए जाने वाले आदेशों, निर्वाचनों में प्रत्याशियों के चयन तथा मतदान व्यवहार में धर्म का राजनीतिक स्वरूप देखने को मिलता है।धर्मनिरपेक्ष संविधान अपनाए जाने के बाद भी धर्म और सम्प्रदाय भारतीय राजनीति के स्वरूप को निम्नलिखित ढ़ंग से प्रभावित करते रहे हैं----

1.धर्म और राजनीतिक दल:--स्वाधीनता के बाद पंथ और सम्प्रदाय के आधार पर भारत में राजनितिक दलों का गठन हुआ है।मुस्लिम लीग, शिरोमणि अकाली दल, राम राज्य परिषद, हिन्दू महासभा, आदि राजनीतिक दलों के निर्माण में पंथिक और साम्प्रदायिक तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।यदि साम्प्रदायिक एक रोग है और वह भी संक्रामक तो इन दलों के शासन और राजनीति पर प्रभाव को सहज ही आंका जा सकता है।ये साम्प्रदायिक दल पंथ को राजनीति में प्रधानता देते हैं, पंथ के आधार पर चुनावों में प्रत्याशियों का चुनाव करते हैं और सम्प्रदाय के नाम पर वोट मांगते हैं।चुनावों में धार्मिक मुद्दे जैसे गौ-वध को बन्द करवाने, राम मंदिर का निर्माण आदि का प्रयत्न करते हैं। प्रो.मॉंरिस जोन्स ने कहा है, "यदि साम्प्रदायिकता को संकुचित अर्थ में लिया जाय अर्थात कोई राजनीतिक दल किसी विशेष पंथिक समुदाय के राजनीतिक दावों की रक्षा के लिए बनी हो तो कुछ पार्टियाँ ऐसी है जो स्पष्ट रूप से अपने को साम्प्रदायिक कहती हैं जैसे मुस्लिम लीग जो भारत में सिर्फ दक्षिण भारत में रह गई है और जो मालाबार मोपला समुदाय के बल पर केवल केरल में ही शक्तिशाली है।"जनसंघ दल के बारे में मॉंरिस जोन्स लिखते हैं, जब तक कट्टरता की मनोवृत्ति से पूर्ण आर.एस.एस.जिसमें हिन्दू सांस्कृतिक जोश और सैन्यवादी टेनिंग दोनों का संयोग है जनसंघ की आड़ में जुटकर काम करता रहेगा, तब तक साम्प्रदायिकता इस पार्टी का एक महत्वपूर्ण पहलू बनी रहेंगी।"

यदि साम्प्रदायिकता को व्यापक अर्थ में लिया जाय अर्थात सम्पूर्ण हिन्दू समाज के भीतर किसी सामाजिक धार्मिक समुदाय के साथ सम्बन्ध के रूप लिया जाय तो सभी पार्टियों में किसी न किसी स्तर पर और कुछ न कुछ मात्रा में ऐसी साम्प्रदायिकता अवश्य मिलेगी, यहाँ तक कि कांग्रेस भी इससे मुक्त नहीं है केरल में ईसाई समुदाय के साथ काँग्रेस का ऐसा गठजोड़ रहा है कि इसे संकुचित दृष्टि से भी साम्प्रदायिक कहा गया है यहाँ तक कि साम्यवादियों ने भीकुछ जगहों पर और कतिपय प्रयोजनों के लिए साम्प्रदायिक क्षेत्र तैयार कर लिए है।

2.धर्म और निर्वाचन ----भारत में अधिकांश राजनीतिक दल और उनके नेता चुनावों में पंथ और सम्प्रदाय की दलीलों के आधार पर वोट मांगते हैं।वोट बटोरने के लिए मठाधीशों इमामों, पादरियों और साधुओं के साथ सांठ गांठ की जाती है।मतदान के अवसर पर मत मांगने वाले और मतदान करने वाले के आचरण पर पंथिक तत्व छाए रहते हैं।मार्च *1977* और जनवरी *1980* के लोकसभा चुनावों के दिनों में दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम की भूमिका से आसानी से यह समझा जा सकता है कि पंथिक नेता राजनीतिक दलों से मुस्लिम सम्प्रदाय के वोटों का किस प्रकार सौदा करते हैं?राजनीतिक नेता के भाँति शाही इमाम ने चुनाव सभाओं में भाषण दिए और मुस्लिम सम्प्रदाय के मतदाताओं को किसी विशेष राजनीतिक दल के पक्ष में मतदान करने के लिए प्रेरित किया।किसी संवाददाता ने लिखा है कि,"सवाल उठता है कि समाजवाद और गणतंत्र की बात करनेवाले अगर इमाम के नाम से वोट पाना चाहते है तो हो सकता है कि बलराज मधोक जैसे लोग शंकराचार्य के नाम पर वोट मांगने लगें।

3.राजनीति में धार्मिक दबाव गुट-----साम्प्रदायिक संगठन भारतीय राजनीति में सशक्त दबाव समूहों की भूमिका अदा करने लगें हैं।ये पंथिक गुट शासन की नीतियों को प्रभावित करते हैं और कभी कभी अपने पक्ष में अनुकूल निर्णय भी करवाते हैं।उदाहरणार्थ, हिन्दुओं की आपत्ति और आलोचना के बावजूद 'हिन्दू कोड बिल'पास कर दिया गया, किन्तु दूसरे सम्प्रदाय के सम्बन्ध में ऐसा कोई महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाया जा सका।स्वतंत्रता के बाद अनेक मुस्लिम संगठनों, जैसे जमीयत उल उलेमा ए-हिन्द,अमारते शरिया, जमायते इस्लामी, आदि ने कम से कम तीन बातों के लिए सरकारी नीतियों को प्रभावित कर दबाव गुटों की भूमिका अदा की है।

4.धर्म के आधार पर पृथक राज्यों की माँग----कई बार परोक्ष रूप से पंथ के आधार पर पृथक राज्यों की माँग भी की जाती रही है अकाली दल द्वारा पंजाबी सूबे की माँग ऊपरी तौर से भाषायी आधार की माँग नजर आती है, किन्तु यथार्थ में यह पंथ के आधार पर ही पृथक राज्य की माँग की थी।*2* नवम्बर,*1949* को मास्टर तारासिंह ने पूर्वी पंजाब में एक सिक्ख प्रांत की मांग करते हुए कहा कि पूर्वी पंजाब के हिन्दू संकीर्ण हदय वाले सम्प्रदायवादी हो गए हैं और सिक्खों को उनसे उचित व्यवहार की आशा नहीं रह गयीं।

5.धर्म और राष्ट्रीय एकता----पंथ और साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता के लिए धातक माने जाते हैं।धार्मिक मतभेदों के परिणामस्वरूप ही हमारे देश का विघटन हुआ था और उसी के कारण आज भी विघटनकारी तत्व सक्रिय हैं।

आगे, धन्यवाद।

2020-08-12
From vivo Notes

Scanned with CamScanner